सहन नहीं कर रहा था, इस लिये कि मेरा झंडा उसी के हाथ में था मेरी छोटी सी सेना का चिन्ह उसी के दम से अवशिष्ट था। परन्तु जब और कोई न रहा तो आख़िर 'अब्बास' (अ0) भी युद्ध कर स्वर्ग को सिधार गया। मेरी कमर इस शोक से टूट अवश्य गई, पर मेरी कार्य–शक्ति में कमी उत्पन्न नहीं हुई। अब स्वयं मेरी बारी थी– मैंने तलवार खींची। उस हद तक मुझे अवश्य युद्ध करना था जितनी कि मुझ में मानव शक्ति थी। तुम्हें मालूम है कि इन सम्पूर्ण शोकों के होते हुये तथा, इन आपत्तियों के बाद भी मैंने युद्ध–क्षेत्र में अपने बाप, दादाओं की याद भूलने नहीं दी। बहर हाल हज़ारों सैनिकों से मैं ने अकेले युद्ध किया, इसमें मुझे जितना घायल होना चाहिये था उसका अनुमान तुम कर सकते हो। अन्त में वह अन्तिम कठिन चरण, जो मेरे लिये पहले ही अत्यन्त सहज था, आ ही गया। मैं घोड़े से ज़मीन पर गिरा तथा 'शिम्र' के खन्ज़र ने मेरे सर और गर्दन का आपसी सम्बन्ध तोड़ दिया। मेरा सर काटा गया तथा बर्छी पर बुलन्द किया गया। 'इब्ने ज़ियाद' की सेना ने वह सब कुछ किया जो एक अत्याचारी के अत्याचार की अन्तिम सीमा हो सकती है, किन्तु इन सब के बाद विजय किस की हुई? तथा हार किस की?

मैं अपने आचरण से न लज्जित हूं न क्षुब्ध, परन्तु संसार जानता है कि 'यज़ीद' लज्जित हुआ और बहुत लज्जित। उसकी ज़िन्दगी मौत बन गई तथा मेरी मृत्यु ने मुझे अमर बना दिया। मुझे तुमको संदेश भी यही देना है कि किसी पवित्र तथा आदरणीय उद्देश्य के लिये सांसारिक कठिनाइयों की कभी परवाह न करना। तुम्हारी मानवता का यही सत्य है।

तुम जो मेरे स्मारकों की स्थापना करते हो और याद ताजा करते हो उनका सारांश यही होना चाहिये कि तुम मेरे उद्देश्यों की ऊंचाई को भी समझ सको तथा व्यवहारिक रूप से उसके पालन का प्रयत्न करो। स्मरण रखो– मैं किसी विशेष सम्प्रदाय से विशिष्ट सम्बन्ध नहीं रखता हूं। जो मेरे सिद्धांत तथा पथ पर ध्यान दे और उससे शिक्षा ग्रहण करे वही मुझ से लाभ उठा सकता है।

□□□

सलाम

मु0 र0 आबिद

चले जो लेखनी तो सत्य को उभार चले,
यथार्थवाद के पग पर दिये संवार चले।
मदीना ज्ञान की गंगोत्री नजफ़ गंगा,
बड़े बड़े जहाँ दर्शन के फूल वार चले।
अली (अ0) को मानता सन्सार बोध का अवतार,
विचारकों के नमन भावना के पार चले।
लुटा लुटा के घर अपना, बुझा बुझा के दिये,
हुसैन धर्म के आयाम सब निखार चले।
हुसैन धन्य है तेरा असम असीम सहन,
क्रूरता के कलाकार बाज़ी हार चले।
अरे! वह नन्हा गला और तीन भाल का तीर,
मसलने बाण को मुस्कान की फुहार चले।
हुसैन की ही बहन है,न बोल इस से यज़ीद,
कहीं न तेरी ही सत्ता के बल उतार चले।